व्याकरणाचार्य महर्षि पाणिनि और अष्टाध्यायी

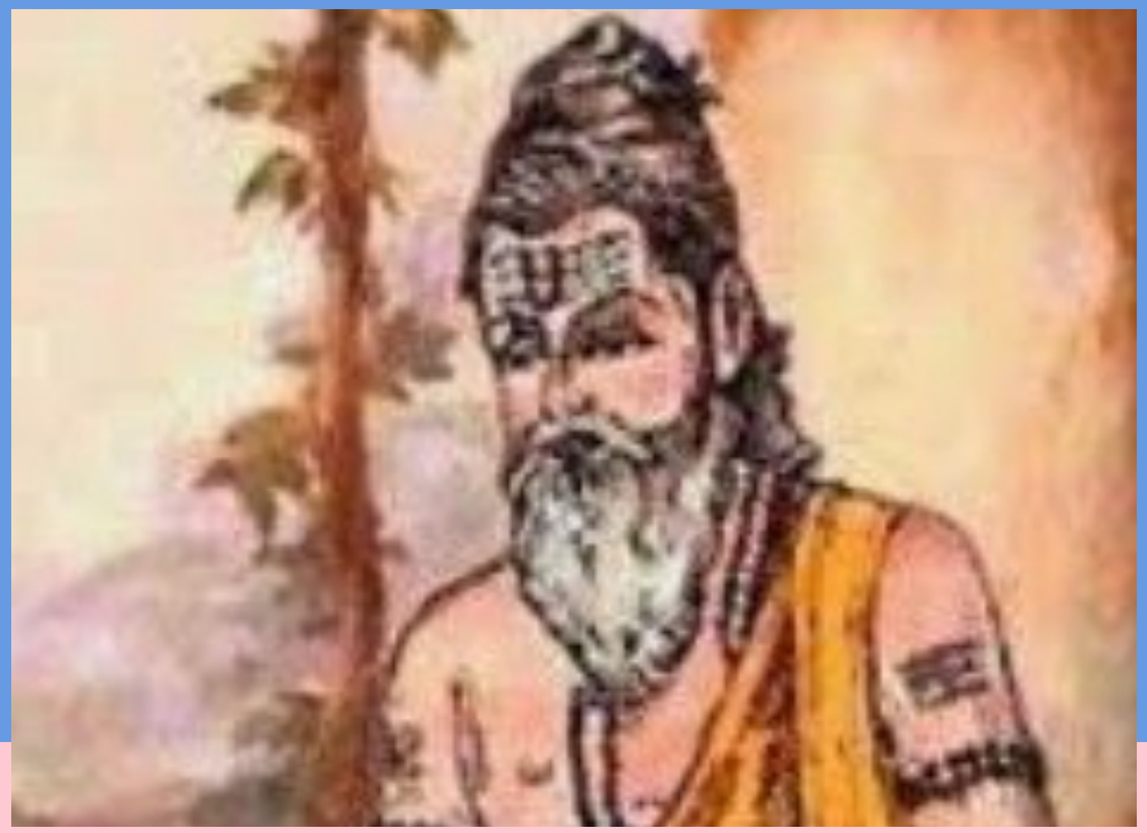

द्वारा-
डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र
सहायक प्रोफेसर
मीडिया अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार
ई-मेल:parmatma.vns@gmail.com

महर्षि पाणिनि: परिचय

आदि व्याकरणाचार्य महर्षि पाणिनि संस्कृत भाषा के प्रसिद्ध विद्वान थे। संस्कृति भाषा को व्याकरण सम्मत रूप देने में पाणिनि का योगदान अतुलनीय माना जाता है। पाणिनि से पूर्व शब्द विद्या के अनेक आचार्य हुए। उनके ग्रंथों को पढ़कर और उनके बीच परस्पर भेदों को देखकर पाणिनि के मन में यह विचार आया कि उन्हें व्याकरण शास्त्र को व्यवस्थित करना चाहिए। व्याकरण का गहन अध्ययन के बाद पाणिनि ने 'अष्टाध्यायी' नामक महान ग्रंथ की रचना की।

जीवन परिचय

महर्षि पाणिनि का जन्म पंजाब के शालातुर में हुआ था जो आधुनिक पेशावर (पाकिस्तान) के करीब तत्कालीन उत्तर पश्चिम भारत के गांधार में 500 ई. पू. (520-460 ई. पू.)में माना जाता है। कुछ लोग इनका जन्म नेपाल के अर्घाखाँची जिले में मानते है। इनके माता का नाम दाक्षी ,पिता का नाम पणिन और गुरु का नाम उपवर्ष था।

अष्टाध्यायी

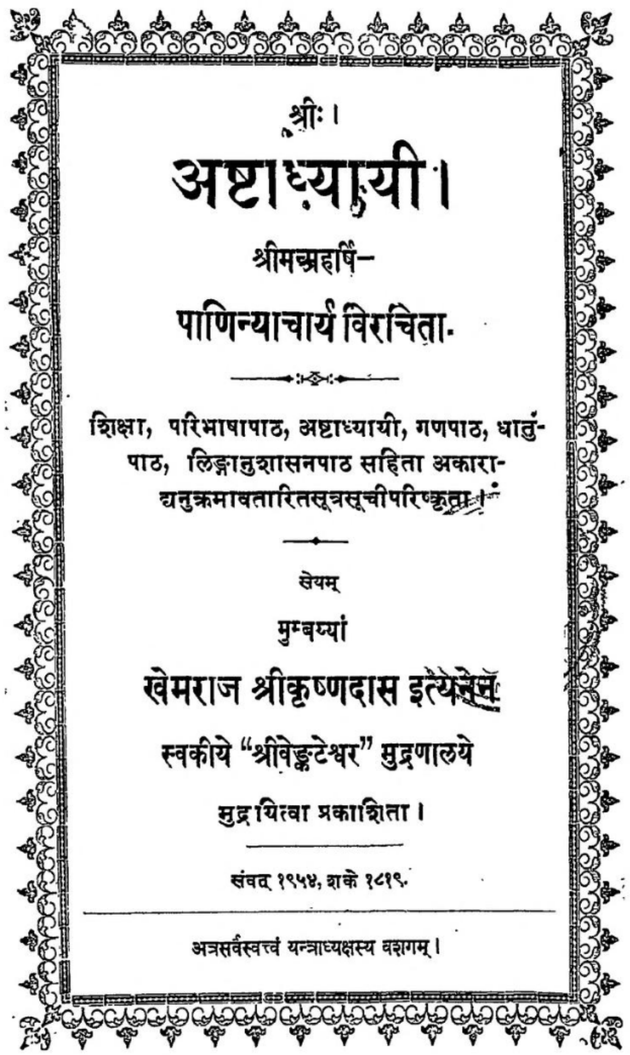

श्रीः।

अष्टाध्यायी।

श्रीमन्महर्षि-

पाणिन्याचार्य विरचिता.

शिक्षा, परिभाषापाठ, अष्टाध्यायी, गणपाठ, धातु-
पाठ, लिङ्गानुशासनपाठ सहिता अकारा-
द्यनुक्रमावतारितसूत्रसूचीपरिष्कृता।

सेयम्

मुम्बय्यां

खेमराज श्रीकृष्णदास इत्येतेन

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालये

मुद्रयित्वा प्रकाशिता।

संवत् १९५४, शके १८१९.

अत्रसर्वस्वत्त्वं यन्त्राध्यक्षस्य वशगम्।

पाणिनि ने 'अष्टाध्यायी' लिखने से पूर्व संस्कृत भाषा की सूक्ष्म छानबीन की थी। इस छानबीन के आधार पर उन्होंने जिस व्याकरण शास्त्र का प्रवचन किया, वह न केवल तत्कालीन संस्कृत भाषा का नियामक शास्त्र बना, अपितु उसने आगामी संस्कृत रचनाओं को प्रभावित किया। अष्टाध्यायी में आठ अध्याय और प्रत्येक अध्याय में चार पाद हैं। काशिका ग्रंथ के अनुसार अष्टाध्यायी में सूत्रों की संख्या 3983 हैं और सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार 3976 है।

*अष्टाध्यायी ग्रंथ के पहले एवं दूसरे अध्याय में संज्ञा और परिभाषा संबंधी सूत्र है एवं वाक्य में आए हुए क्रिया और संज्ञा शब्दों के पारस्परिक संबंध के नियामक प्रकरण भी है।

*तीसरे, चौथे और पाँचवे अध्याय में क्रमश: धातुओं में प्रत्यय लगाकर कृदंत शब्दों का निर्वचन और संज्ञा शब्दों का विस्तृत निर्वचन है।

*छठे, सातवें और आठवें अध्यायों में उन परिवर्तनों का उल्लेख है जो शब्द के अक्षरों में होते हैं। ये परिवर्तन या तो मूल शब्द में जुड़नेवाले प्रत्ययों के कारण या संधि के कारण होते हैं।

अष्टाध्यायी मात्र व्याकरण ग्रंथ नहीं हैं। इसमें प्रकारांतर से तत्कालीन भारतीय समाज का पूरा चित्र मिलता हैं। उस समय के भूगोल, सामाजिक , आर्थिक , शिक्षा और रजनीतिक जीवन, दार्शनिक चिंतन, खान-पान , रहन -सहन आदि संस्कृति के प्रसंग स्थान-स्थान पर अंकित हैं।

अष्टाध्यायी का महत्व

5

सभी प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वान् अष्टाध्यायी के महत्व को एक स्वर से स्वीकार करते है। व्याकरण संबंधी ग्रन्थों में पाणिनि व्याकरण अर्थात अष्टाध्यायी को सर्वाधिक उत्कृष्ठ माना गया है। इसके पीछे तर्क हैं-

*पाणिनी व्याकरण से पूर्व तथा उत्तरकाल में विनिर्मित अनेकानेक व्याकरणशास्त्र का विलोपन समय के साथ हो गया लेकिन पाणिनि का अष्टाध्यायी लगभग 2500 वर्षों से जनमानस के बीच निरन्तर लोकप्रिय बना है।

*अष्टाध्यायी का महत्व इसलिए भी हैं कि यह महान ग्रन्थ अन्य व्याकरण ग्रन्थों की अपेक्षा सरल हैं और संस्कृत भाषा को उच्च व्याकरण सम्मत बनाती है।

आचार्य पाणिनि को यह ज्ञात था कि किसी भी शास्त्र का प्रयोजन लोक-व्युत्पादन है। अतः लोक स्थिति का उल्लंघन करके कोई भी शास्त्र लोक में प्रतिष्ठित नहीं हो सकता । तभी तो उन्होंने ऐसे व्याकरण सूत्र की रचना की जो संस्कृत भाषा को लोक समृद्धि बनाती है।

पाणिनीय व्याकरण की प्रमुख विशेषताएँ -

(१) सम्पूर्णता (completeness)-

पाणिनि का व्याकरण संस्कृत भाषा का अत्यन्त सूक्ष्म विश्लेषण करता है। यह उस समय की बोलचाल की मानक भाषा का तो वर्णन करता ही है, साथ ही वैदिक संस्कृ और संस्कृत के क्षेत्रीय प्रयोगों का भी वर्णन करता है। यहाँ तक कि पाणिनि ने भाष सामाजिक-भाषिक (sociolinguistic) प्रयोग पर भी प्रकाश डाला है।

(२) संक्षिप्तता (compactness)-

पाणिनि का व्याकरण सम्पूर्ण होने के साथ ही इतना छोटा है कि लोग इसे आसानी याद कर सकते है।

३) प्रयोग सरल (Easy user)-

महर्षि पाणिनि के व्याकरण का प्रयोग सरलतापूर्वक संभव है।

(४) सामान्य (generalised approach)-

पाणिनि ने अपना व्याकरण संस्कृत के लिये जरूर रचा, लेकिन इसकी युक्तियाँ और उपकरण सभी भाषाओं के व्याकरण के विश्लेषण में प्रयुक्त की जा सकती हैं। जो अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

अष्टाध्यायी की अन्य विशेषताएं-

अन्य विशेषताएँ

(क) इसमें वाक्य को भाषा की मूल इकाई माना गया है।

(ख) ध्वनि-उत्पादन-प्रक्रिया का वर्णन एवं ध्वनियों का वर्गीकरण किया गया है।

(ग) सरल और सटीक पद-विभाग है।

(घ) व्युत्पत्ति - प्रकृति और प्रत्यय के आधार पर शब्दों का विवेचन है

अष्टाध्यायी में वैदिक संस्कृत और उस समय की समकालीन शिष्ट भाषा में प्रयुक्त संस्कृत पर सर्वांगपूर्ण विचार किया गया है। उस समय की परिस्थितियों के अनुसार पाणिनि ने अपनी समकालीन संस्कृत भाषा का बहुत अच्छा सर्वेक्षण किया था।

अष्टाध्यायी में छः प्रकार के सूत्रों की चर्चा है-

संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधम् सूत्रं मतम् ॥

(१) संज्ञा सूत्र : इसे नामकरणं संज्ञा भी कहते हैं जिसमें तकनीकी शब्दों का नामकरण है।

(२) परिभाषा सूत्र : व्याकरण नियमों को परिभाषित किया गया हैं।अर्थात यह नियमकारिणी परिभाषा हैं।

(३) विधि सूत्र : इसमें व्याकरण विषय का विधान बताया गया है।

४) नियम सूत्र : इसमें व्याकरण नियमों का उल्लेख है।

(५) अतिदेश सूत्र : अतिदेश सूत्र से तात्पर्य जो अपने गुणधर्म को दूसरे सूत्रों पर लागू करते हैं।

(६) अधिकार सूत्र : इसमें अधिकार संबंधी सूत्र की व्याख्या है।
(एकत्र उपात्तस्य अन्यत्र व्यापारः अधिकारः)

अष्टाध्यायी की प्रासंगिकता: तकनीकी दृष्टि में

●द एमएलबीडी न्यूज़ लेटर (A monthly of Indological bibliography in April, 1993) में महर्षि पाणिनि को " फर्स्ट साफ्टवेयर मेन विद आउट हार्डवेयर " घोषित किया हैं। लेख का मुख्य शीर्षक "Sanskrit software for future hardware" था, जिसमें बताया गया कि कंप्यूटर प्रोग्रामिंग में संस्कृत भाषा सबसे उपयुक्त है, जिसका मूल संस्कृत व्याकरण है। कंप्यूटर भाषा के अधिकांश वैज्ञानिक अब मानते हैं कि आधुनिक समय में संस्कृत व्याकरण कम्प्यूटर की भाष संबंधी सभी समस्याओं को हल करने में सक्षम हैं। पाणिनि का अष्टाध्यायी इसके लिए सर्वोत्तम माना गया।

- नासा के वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने अमेरिका में कृत्रिम बुद्धिमता और पाणिनि व्याकरण के बीच की शृंखला की खोज की। रिक ब्रिग्स द्वारा संस्कृत के उपयोग की खोज से पूर्व अन्य भाषाओं को कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए अनुकूल बनाना बहुत मुश्किल कार्य था।

पाणिनि व्याकरण की महत्ता पर विद्वानों के विचार-

◆प्रसिद्ध जर्मन भारत विद मैक्समूलर ने अपनी पुस्तक 'साइंस ऑफ थॉट' में लिखा हैं कि अंग्रेजी भाषा में सम्मिलित 250,000 शब्द कोश की सम्पूर्ण संपदा के स्पष्टीकरण हेतु आवश्यक धातुओं की संख्या पाणिनीय धातुओं से बहुत कम हैं।

◆पाणिनीय व्याकरण मानवीय मस्तिष्क की सबसे बड़ी रचनाओं में से एक हैं।

◆पाणिनीय व्याकरण की शैली अतिशय प्रतिभापूर्ण हैं और उसके नियम अत्यंत सतर्कता से बनाये गये है।

◆ संसार के व्याकरणों में पाणिनीय व्याकरण सर्वशिरोमणि हैं। यह मानवीय मस्तिष्क का महत्वपूर्ण अविष्कार है।

◆ पाणिनीय व्याकरण उस मानव मस्तिष्क की प्रतिभा का आश्चर्यतम नमूना है, जिसे किसी दूसरे देश ने आज तक सामने नहीं रखा।

संदर्भ-

1-http://www.iloveindia.com/literature/sanskrit/poets/panini.html

2- Biography of Panini in Hindi Jivani, Published by: Jivani.org

3. Panini Biography -Life & works

4-कीथ, आर्थर बेरीडेल (1998)। ऋग्वेद ब्राह्मण: ऋतवेद के ऐतरेय और कौतिक्त ब्राह्मण । दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

5- पतंजलि; बैलेंटाइन, जेम्स रॉबर्ट; Kaiyaṭa; नगेभाउ (1855)। महाभाष्य

6-https://en.m.wikipedia.org/wiki

धन्यवाद

Thanks